वचन

संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के जिस रुप से यह पता चले कि वह एक का बता रहा है अनेक को उसे वचन कहते हैं । हिन्दी में दो वचन है -

१. एकवचन

२. बहुवचन

संस्कृत के द्विवचन को हिन्दी में बहुवचन के अन्तर्गत गिन लिया जाता है । हिन्दी में बहुवचन का अर्थ है - एक से अधिक ।

एक वचन :- संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के जिस रुप से एक का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं ।

जैसे :-लडका, लडकी, चिडिया

बहु वचनः- संज्ञा, सर्वनाम और विशेषता के जिस रुप से एक से अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :-लडके, लडकियाँ, चिडियाँ.

एक के लिए बहुवचन का प्रयोगः- कई बार एक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

सम्मानार्थ :- मेरे पिताजी लोक प्रिय नेता है ।

अभिमानार्थः- हमारी आज्ञा है कि कक्षा में कोई न बोले

विशेषः- कुछ शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में ही होता है ।

उदाहरणः- प्राण, दर्शन, दाम.

एक वचन से बहुवचन बनाने के नियम

* आ अन्तवाले शब्दों के अन्तिम आ को ए करके -

गधा - गधे केला - केले बेटा - बेटे, गन्ना - गन्ने

लडका - लडकें, भेडिया - भिडिये, घोडा - घोडे.

* स्त्री लिंग इ, ई, को इयाँ करके -

रीति - रीतियाँ, गति - गतियाँ, नीति - नीतियाँ

तिथि - तिथियाँ सन्धि - सन्धियाँ

कापि - कापियाँ, टोपी - टोपियाँ

* सम्बन्ध (रिश्ता) बताने वाले शब्दों के अन्तिम 'आ' में कोई परिवर्तन नही होता ।

<u>जैसे:</u> मामा - मामा, चाचा - चाचा

* स्त्री लिंग शब्दों के अन्तिम अ को एँ करके -

दुकान - दुकाने, पुस्तक - पुस्तके, रात - राते,

आँख - आँखे बहन - बहने, बात - बाते

* स्त्री लिंग शब्दों के या को याँ करके -

<u>उदाहरण:-</u> चिडिया - चिडियाँ, लुटिया - लुटियाँ, गुडिया - गुडियाँ

चुहिया - चुहियाँ, कुटिया - कुटियाँ

* स्त्री लिंग शब्दों के 'आ' के बाद एँ जोड करके-

शाखा - शाखाएँ, बाला - बालाएँ, लता - लताएँ, कथा - कथाएँ

पाठशाला - पाठशालाएँ, कक्षा - कक्षाएँ, भाषा - भाषाएँ.

* देवता, विद्यार्थी, दानी, मुनि, गुरु, साधु, डाकू, उल्लू, आदि कुछ शब्दों में (कर्ता कारक के) बहुवचन में कोई परिवर्तन नही होता -

मुनि तप करता है । मुनि तप करते है ।

विद्यार्थी आया है । विद्यार्थी आये हैं ।

* ओ, औ अन्त वाले शब्दों के (कर्ता कारक के) बहुवचन में कोई परिवर्तन नही होता -

सरसों - सरसों माधो - माधो

जौ - जौ ऊधो - ऊदो

* स्त्री लिंग शब्दों के अन्त वाले उ, ऊ, औ के बाद एँ जोडने से

वस्तु - वस्तुएँ, लू - लुएँ, धेनु - धेनुएँ, ऋतु - ऋतुएँ,

बहू - बहुएँ, गौ - गौएँ

* लोग, दल, वर्ग, जन, वृन्द, गण आदि शब्द लगाकर भी प्रसंगानुसार एक वचन या बहुवचन में प्रयोग किया जाता है ।

गरीब लोग कहाँ जाये ?

मित्र वर्ग क्या कर रहा है ?

गुरुजन पधारे हैं ।

सेवा - दल जनता का है ।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उस का संबंध वाक्य की क्रिया से होती है उसे ''कारक'' कहते हैं ।

हिन्दी में आठ करक हैं । कारकों का बोध कराने के लिए संज्ञा के आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं ।

हिन्दी के कारक और उनकी विभक्तियाँ इस प्रकार है

कारक	विभक्तियाँ
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से, के द्वारा, के साथ, के कारण
संप्रदान कारक	को, के लिये
अपादान कारक	से
संबन्ध कारक	का, के , की
अधिकरण कारक	मे, पर
सम्बोधन कारक	ओ, अरे, हे, अरी, और, अजी

<u>कर्ता कारकः-</u> इस कारक का चिह्न 'ने' है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से काम करनेवाले का बोध होता है। उसे कर्ताकारक कहते हैं।

<u>उदाहरण :-</u> राम ने रावण को मारा।
राकेश ने खाना खाया।
मै नें चिट्ठी लिखी।
धीरज ने रोटी खायी।
सिपाही ने चोर को पकडा।

<u>सूचनाः-</u> हिन्दी में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल में ही होता है। वर्तमान काल और भविष्यत् काल में 'ने' को प्रयोग नही होता।

<u>कर्मकारकः-</u> जिस वस्तु पर कर्म का फल पडता है उसे कर्मकारक कहते हैं। कर्मकारक वाक्य के कर्म और क्रिया के बीच में आता है।

उदाहरण:- राम ने रावण को मारा ।

सिपाही ने चोर को पीटा ।

सीता ने पिता को १ रुपये दे दी ।

शेखर ने कुत्ते को पत्यर से मारा ।

करण कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया करने के साधन का बोध हो ।

उदाहरण:- चाकू से सेब छीलो ।

हम आँखो से देखते ।

कानो से सुनते ।

नाक से सूंघते है ।

मै ध्यान से पढ़ता हूँ ।

सम्प्रदान कारक:-जिस संज्ञा या सर्वनाम के लिए कुछ किया या दिया जाये ।

कुछ किया दिया जाये ।

राजेन्द्र को दस रुपये दीजिये ।

कान्ता को अंगूठी दे दो ।

कविता के लिए सीता खाना लायी ।

पिता घर चलाने केलिये पैसे कमाते हैं ।

अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से पृथक् होने का अर्थ प्रकट हो ।

जैसे :- वृक्ष से पत्ते गिरते है ।

अलग होने के कई सूक्ष्म अर्थों में भी अपादान का प्रयोग होता है ।

निकास:- गंगा गंगोत्री से निकलती है ।

तुलना :- अन्य नेताओं से मोराजी देसाई अधिक गंभीर हैं।

आरंभ :- कल से खूब पढाई करूँगा ।

भय :- बालक बाघ से डरता है ।

शिक्षण :- उसने उदय शंकर से नृत्य सीखा था ।

दूरी :- कर्नूल से हैदराबाद कितनी दूर है ?

सम्बन्धकारक -

एक संज्ञा का संबंध का, के, की, री, रा, रे. के चिह्नों के माध्यम से दूसरी संज्ञाओं से होता है ।

अतः- संज्ञा के जिस रुप से उस का संबन्ध वाक्य की संज्ञा से हो, उसे संबन्ध कारक कहते हैं । अर्थात एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध कारक कहते हैं। अर्थात एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध होता है ।

उदाहरणः- रवि का भाई ।

रवि की घडी ।

ललिता के बच्चे

मेरा विश्वविद्यालय

मेरी पुस्तके

तुम्हारे पैसे

अधिकरण काकरः- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया के स्थान, समय या अवसर का बोध होता है ।

उदाहरणः- घर में कौन है ?

सरोवर मे कमल विकसित है ।

तुम्हारे मन में क्या है ?

पेड पर बन्दर बैठा है ।

सीता कुर्सी पर बैठी है ।

संबोधन कारक :-संज्ञा के जिस रुप में किसको पुकारा, बुलाया. या उद्‌बोधित किया जाये। संबोधन का चिह्न प्रायः शब्द से पूर्व जुडता है। हे, अरे, अजी, ओ, अरी, रे. इत्यादि इसके चिह्न है।

जैसेः- अरे सूरज! तु ने यह क्या किया ?

अरे सीता! कहाँ जा रही हो।

हें शिष्यो ! अब हम चले हैं।

Prepared by
B. Ram Mohan
M.A., M.Phil, HPT(Ph.D.)
APSWRS & Jr. College,
Pulivendula
YSR Kadapa (Dist).